B-A III
(V.)
Paper-VII

निरपेक्ष न्यायवाक्य (Categorical Syllogism)

1

मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य

न्यायवाक्य :- (न्यायवाक्य (सिलोजिज्म) को न्यायप्रयोग या हेत्वनुमान भी कहा जाता है। कभी-कभी संक्षेप में उसको अनुमान या न्याय भी कहा जाता है) — वह युक्ति है जिसमें दो आधारवाक्यों से एक निष्कर्ष का निगमन किया जाता है। निरपेक्ष न्यायवाक्य वह युक्ति है जिसमें तीन निरपेक्ष तर्कवाक्य होते हैं। इन तीनों तर्कवाक्यों में कुल मिलाकर तीन पद होते हैं जिनमें प्रत्येक पद दो तर्कवाक्यों में आता है। न्यायवाक्य उस समय मानक आकार में होता है जब इसके सभी आधार-वाक्य एवं निष्कर्ष मानक आकार के निरपेक्ष तर्कवाक्य हों और वे एक विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित हों।

मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य का निष्कर्ष एक मानक तर्कवाक्य होता है। उसमें न्यायवाक्य के तीन पदों में से दो पद पाये जाते हैं। निष्कर्ष का विधेय पद न्यायवाक्य का 'मुख्य पद' और निष्कर्ष का उद्देश्य पद न्यायवाक्य का 'अमुख्य पद' कहलाता है।

कोई भी बहादुर कायर नहीं होता।
कुछ सिपाही कायर होते हैं।
अतः कुछ सिपाही बहादुर नहीं होते हैं।

इस मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य में 'सिपाही' पद अमुख्य पद और 'बहादुर' मुख्य पद है। न्यायवाक्य का तीसरा पद जो निष्कर्ष में नहीं आता, किन्तु दोनों आधारवाक्यों में आता है 'मध्यम पद' कहलाता है इसमें 'कायर' पद मध्यम पद है।

जिस आधार-वाक्य में मुख्य पद आता है उसे मुख्य-आधार-वाक्य और जिसमें अमुख्य पद आता है उसे अमुख्य आधार-वाक्य कहते हैं। उपरोक्त न्यायवाक्य में, "कोई भी बहादुर कायर नहीं होता" मुख्य आधार वाक्य है और "कुछ सिपाही कायर होते हैं" अमुख्य आधार-वाक्य है।

मुख्य आधार-वाक्य का स्थान प्रथम होता है, अमुख्य आधार-वाक्य का बाद में और निष्कर्ष अन्त में।

मुख्य आधार वाक्य तो वही है जिसमें मुख्य पद होता है (मुख्य पद निष्कर्ष का विधेय होता है) और अमुख्य आधार वाक्य भी अपने स्थान से परिवर्तित नहीं होता। अमुख्य आधार वाक्य का निर्धारण अमुख्य पद की उपस्थिति से होता है (अमुख्य पद निष्कर्ष का उद्देश्य होता है।)

मानक निरपेक्ष न्यायवाक्य की अवस्था (Mood) — इसको तीन अक्षरों से दर्शाया जाता है — प्रथम अक्षर न्यायवाक्य के आधारवाक्य का नाम बताता है द्वितीय अक्षर, अमुख्य आधार-वाक्य के आकार का और तृतीय अक्षर निष्कर्ष के आकार का नाम बताता है। उदाहरणार्थ पूर्ववर्ती न्यायवाक्य में; चूँकि मुख्य आधार वाक्य 'E' तर्कवाक्य है, अमुख्य आधार वाक्य 'I' तर्कवाक्य है और निष्कर्ष 'O' तर्कवाक्य है, इसलिए न्याय वाक्य की अवस्था EIO है।

Scanned with CamScanner

आकृति — आकृति का निर्धारण आधारवाक्यों में मध्यम पद की स्थिति से होता है। न्यायवाक्य की चार विभिन्न आकृतियाँ सम्भव है। मध्यम पद मुख्य आधारवाक्य का उद्देश्य और अमुख्य आधार वाक्य का विधेय हो सकता है, या यह मुख्य आधार वाक्य में विधेय और आधार वाक्य में उद्देश्य हो सकता है। मध्यम पद की ये विभिन्न स्थितियाँ प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ आकृतियाँ बनाती है। ~~नीचे इन्हें दर्शाया गया~~

M-P	P-M	M-P	P-M
S-M	S-M	M-S	M-S
∴ S-P	∴ S-P	∴ S-P	∴ S-P
First Figure	Second	Third	Fourth

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D.K. College, Dumraon

Scanned with CamScanner